

امام حسن عسکریؑ بنوریؑ

شعاع

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
يُشَكِّلُ لَكُمْ طَرَفًا سَمَاءًا مِنْ نُورٍ آيَاتِهِ وَرُشْدًا



مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ-۳

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लखनऊ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufuran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष-2

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 11

माह मई — 2006 लखनऊ
नूर-ए-हिदायत फाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

इमामे हसन
असकरी (अ0)
नम्बर-1427

शुआ-ए-अमल
“लखनऊ”

इमामे हसन
असकरी (अ0)
नम्बर-1427

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नकवी साहिब
सम्पादक
सै. मुस्तफा हुसैन नकवी 'असीफ' जायसी
उप-सम्पादक
हैदर अली

कार्यकारिणी बोर्ड
प्रोफेसर सै. हुसैन कमालुद्दीन अकबर, मु0 र0 आबिद,
सैय्यद समीउल हसन वसीम, शबीब अकबर नकवी

वार्षिक — 200 रु

मिलने का पता

कीमत — 20 रु

नूर-ए-हिदायत फाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ — 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नकवी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निजामी आफसेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफिस नूर-ए-हिदायत फाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नकवी 'असीफ जायसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न०	मज़मून	लेखक	पेज न०
1-	इमामे हसन असकरी अलैहिस्सलाम के मुसलमानों पर एहसानात काएदे मिल्लत मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी साहब क़िब्ला		3
2-	इमामे हसन असकरी अलैहिस्सलाम की हयात और उनके कारहाए नुमायाँ पर एक नज़र इमादुलउलमा अल्लामा सैय्यद अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला		8
3-	एक इमाम—दबदबे का नाम मु० र० आबिद		11
4-	घर और समाज में खुदा का डर (तक़्वा) हुज्जतुल इस्लाम प्र० हुसैन अन्सारियान		13
5-	मुख्य समाचार इंदारा		15

इमामे हसन असकरी (अ०): एक नज़र में

कुन्नियत (सम्बन्ध-सूचक नाम) :	अबू मुहम्मद (मुहम्मद के पिता)
नाम :	हसन (अ०)
लक़ब (उपनाम) :	अस्करी (मुहल्ला अस्कर के रहने वाले), हादी (मार्ग-दर्शक) ज़की (पाक), ख़ालिस (शुद्ध/निर्दोष), सिराज (द्वीप), इब्नुर्रज़ा (रज़ा के बेटे),
पिताश्री :	इमाम अली नक़ी (अ०)
माता :	हदीसा ख़ातून
जन्म :	10 रबीउलसानी 232 हिजरी, जुमा/8 दिसम्बर 846 ई०
जन्म-स्थान :	मदीना मुनव्वरा (अरब)
मुहर मुबारक (का आलेख) :	इन्ना लिल्लाहे शहीदा (हम अल्लाह के लिए हैं जो देखने वाला, साक्षी है)
पत्नी :	नरजिस ख़ातून
सन्तान (औलाद) :	इमाम मेहदी (इमामे ज़माना अ०)
सेवक (ख़ादिम) :	मुहम्मद बिन साद
शहादत/वफ़ात (पुण्यतिथि) :	8 रबीउलअव्वल 260 हि० जुमा/5 जनवरी 874 ई०
शहादत का कारण :	सम्राट मोतमिद अब्बासी द्वारा ज़हर
मज़ार :	सामरा (इराक़)

इमामे हसन असकरी (अ0)

के मुसलमानों पर एहसानात

काएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नकवी साहब किब्ला

यूँ तो मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) के एहसानात पूरी काएनात पर हैं क्योंकि यही वह मुक़द्दस जातें हैं जो काएनात की पैदाईश की वजह और मख़लूक़ात की पैदाईश का सबब हैं। "लौलाका लमा ख़लक़तुल अफ़लाक़" की सनद साबित कर रही है कि जो भी है उनके तुफ़ैल में है। कुदरत ने तख़लीक़ का निज़ाम यूँ रखा और तख़लीक़ की तरतीब यूँ काएम की कि मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) का एहसान पूरी काएनात पर तो हो लेकिन काएनात में किसी का एहसान मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद पर न रहे। इसलिए उनको पहले पैदा किया और काएनात को बाद में।

एक फूल भी अगर चमन में खिलता है तो कितनों की मिन्नत का बोझ लिये हुए, ज़मीन का एहसान, पानी का एहसान, हवा का एहसानमन्द, सूरज और धूप का मोहताज, हवाओं का मिन्नतकश, बाग़बान की तकलीफों का एहसानमन्द। इसी तरह से एक इन्सान भी जब वजूद में आता है तो काएनात की बेशुमार चीज़ों के एहसान के नीचे दबा हुआ। कुदरत नहीं चाहती थी कि मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) काएनात की किसी भी चीज़ के एहसानमन्द रहें इसलिए इनको पहले पैदा किया और इनके तुफ़ैल में काएनात को पैदा किया (या कुछ रवायतों से इन्हीं के नूर से काएनात की सारी चीज़ों की पैदाईश हुई है)।

अब काएनात पर रसूल (स0) व आले

रसूल (अ0) का एहसान हुआ और आलमे मौजूदात उनका एहसानमन्द है। इसी तरह से अगर उनके इल्मी व अमली कारनामे न होते तो इस्लामे हकीकी महफूज़ न रहता। यह उन्हीं का सदका है कि सही इस्लाम हम तक पहुँच सका वरना इस्लाम के दुश्मनों ने इस्लाम का नकाब ओढ़कर इस्लाम को मिटाने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। अगरचे मुसलमान हुकमराँ और तारीख़ व हदीस लिखने वाले हमारे अइम्मए मासूमीन (अ0) को एक सोची समझी साज़िश के तहत बुरी तरह नज़रअन्दाज़ करते रहे मगर आइम्मए मासूमीन कुदरत की तरफ से दिये गए इस्लाम की हिफ़ाज़त के फ़रीजे को बहुत अच्छी तरह अन्जाम देते रहे। दुनिया अच्छी तरह से जानती थी कि हकीकी इस्लाम इन्हीं के पास है और यही रसूल (स0) के वारिस हैं मगर उनसे तअल्लुक़ रखना जुर्म था और इन से कोई हदीसे रसूल (स0) नक़ल करना मना था।

अगरचे सिहाहे सित्तः की सारे लेखकों ने हमारे इमामों, ख़ास तौर से दसवें और ग्यारहवें इमाम के ज़माने में ज़िन्दगियाँ बसर की। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी जिनकी सही बुख़ारी आम मुसलमानों में कुआने मजीद के बाद सबसे एतेबार वाली समझी जाती है, उनका इन्तेक़ाल 256 हि0 में हुआ और यह दसवें और ग्यारहवें इमाम के ज़माने के थे। मुस्लिम इब्ने हज्जाज नीशापूरी जिनकी किताब सही मुस्लिम दूसरे नम्बर पर

एतेबार वाली समझी जाती है 268 हिजरी में दुनिया से रुखसत हुए और इमामे हसन असकरी (अ0) के ज़माने के थे। इसी तरह दारमी का इन्तेक़ाल 255 हिजरी में हुआ और यह भी इमाम अली नकी (अ0) व इमाम हसन असकरी (अ0) के ज़माने के थे। इब्ने माजा क़ज़वीनी ने 275 हिजरी में वफ़ात पाई और इब्ने माजा 275 हि0, तिरमिज़ी 279 हि और नसाई 303 हिजरी में वफ़ात पाए हैं। इन तारीख़ों से साबित होता है कि सिहाहे सित्ता के तमाम लेखकों ने इमामों का ज़माना देखा सिर्फ़ नसाई अलग है मगर उन्होंने भी ग़ैबते सुग़रा के ज़माने में ज़िन्दगी बसर की। मगर उनकी किताबों से ऐसा मालूम होता है कि जैसे उनके ज़माने में अहलेबैत (अ0) का "मआज़ल्लाह" कोई वजूद ही न हो।

यूँ तो हर इमाम इस्लाम की बारादरी में एक सुतून की हैसियत रखता है। मगर इमाम हसन असकरी (अ0) का दौर बेइन्तहा हस्सास और नज़ाकत वाला है। क्योंकि आप वह आख़री इमाम हैं जो ज़ाहिर में निगाहों के सामने हैं और आपके बाद नामालूम मुद्दत के लिए ग़ैबत का दौर शुरू होने वाला है। इसलिए क़यामत तक के लिए सारे इन्तिज़ाम अकेले इस इमाम को अन्जाम देना हैं। न सिर्फ़ यह कि क़यामत तक के लिए इमामत के सिलसिले को बाकी रखने का इन्तिज़ाम फरमाना है बल्कि इसका भी एहतेमाम फरमाना है कि ग़ैबत के ज़माने में लोग गुमराह न हो जाएँ और हक़ के रास्ते पर चलते रहें। इमाम हसन असकरी (अ0) का मुसलमानों पर यह बड़ा एहसान है बावजूद यह कि आका का तक़रीबन पूरा इमामत का ज़माना कैद व बन्द की सख़्तियों में गुज़रा मगर क़यातम तक के लिए हमारी हिदायत का इन्तिज़ाम फरमा

गए। अगर इमाम (अ0) यह एहतेमाम न करते तो हक़ के चाहने वाले अपने ज़माने के इमाम को पहचाने बिना जाहिलियत की मौत मर जाते।

अगर इस्लामी तारीख़, ख़ास तौर से शीआने अहलेबैत (अ0) की तारीख़ को गहराई से देखा जाए तो यह हकीकत खुलकर सामने आएगी की यह इमामे हसन असकरी (अ0) ही की कोशिशें थीं कि जिन्होंने एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया की मेहनतों और पहले के सब इमामों की कुर्बानियों को बेकार जाने से बचा लिया और दुनिया में हकीकी इस्लाम और शीअियत को जो बढ़ावा मिला उसमें यूँ तो हर इमाम हिस्सेदार है मगर हमारे इस ग़्यारहवें इमाम का किरदार ख़ास अहमियत वाला है। इस नाजुक हकीकत को समझने के लिए इमामे हसन असकरी (अ0) की इमामत के दौर का एक हलका सा तारीख़ी खाका समझना ज़रूरी है। अब्बासी ख़लीफ़ाओं ने हुकूमत के लिए ईरानियों का सहारा लिया था मगर वह इतना सर चढ़ गए कि उनको दबाना ज़रूरी हो गया। इसलिए अब अब्बासी ख़लीफ़ाओं ने तुर्कों की मदद हासिल की और बग़दाद में तुर्कों का बोलबाला हो गया। यह तुर्क इस्लाम को पूरी तरह नहीं जानते थे इनको इस्लाम सिखाने वाले यही अब्बासी ख़लीफ़ा थे। जब इन तुर्कों ने देखा कि रसूल के नाएब होने के दावेदार और इस्लाम के ज़िम्मेदार खुद बहुत ही अय्याश, ज़ालिम और बेदीन हैं तो यह तुर्क खुद इस्लाम से बदगुमान हो गए और उन्होंने ने बग़दाद में जुल्म व सितम का बाज़ार गर्म कर दिया और किसी की भी जान व माल व इज़्ज़त व आबरू महफूज़ न रही। हर तरफ़ हाहाकार मच गई मगर अब्बासी ख़लीफ़ा उनके सामने बेबस थे इसलिए मजबूरी में उन्हें अपनी राजधानी बग़दाद से सामरा में मुत्तक़िल

करना पड़ी इस तरह से सारे तुर्क सामरा मुन्तकिल हो गए। यही वह ज़माना था जब हमारे दो इमामों, इमाम अली नकी (अ0) व इमाम हसन असकरी (अ0) को सामरा बुलाया गया। इन दोनों इमामों को बहुत ही सख्तियों में रखा गया। मगर जुल्म व सितम की घटाएँ उनके किरदार के सूरज को छिपा न सकीं और तुर्क उन इमामों के लासानी किरदार से असर लेना शुरू हुए। उनको देखकर उन्हें अन्दाज़ा हुआ कि हकीकी इस्लाम क्या है और अहलेबैत (अ0) की मुहब्बत के निशान उनके पत्थर दिलों पर उभरने लगे। वहशी तुर्क इमामत के किरदार से मुतास्सिर होने लगे और बहुतों ने शीअियत कबूल कर ली और जिन्होंने शीअियत कबूल नहीं भी की उनके दिलों में भी अहलेबैत (अ0) के लिए नर्म गोशे पैदा हो गए। यही वह तुर्क थे जिन्होंने आज़रबाइजान, अफगानिस्तान, ईरान यहाँ तक कि हिन्दुस्तान में भी शीअियत को बढ़ावा दिया। इस वक़्त शीआने हैदरे करार की सबसे ज़ियादा आबादी ईरान में है। ईरान में शीअियत को सबसे ज़ियादा बढ़ावा सफ़वी दौर में हुआ और यह सफ़वी बादशाह ईरानी नसल से नहीं बल्कि तुर्क थे। इस तरह ग़ैर शीआ तुर्कों के दिलों में भी मासूम इमामों के लिए नर्म गोशे मौजूद रहे और इसका सबूत यह है कि जब तुर्की में खिलाफते उस्मानिया काएम हुई तो जुमे के खुत्बे में बारह इमामों के नामों को शामिल किया गया। और यही तुर्क खलीफा थे जिन्होंने मस्जिदे नबवी की मेहराबों पर चौदह इमामों के नाम लिखवाए जो आज तक बाकी हैं इस तरह से कहा जा सकता है कि अगरचे शीअी नुक़त-ए-नज़र से इनकी हुक्मत सही नहीं थी मगर सदियों बाद भी टिमटिमाती ही सही मगर मुहब्बते अहलेबैत (अ0) की शमा उनके दिल में

रौशन थी।

मुसलमानों पर बल्कि यूँ कहा जाए कि इन्सानी दुनिया पर इमामे हसन असकरी (अ0) का यह बड़ा एहसान कि उस इमाम के आने का एहतेमाम किया जिसे क़यामत तक के लिए इन्सानों की रहबरी करना है। दुश्मनों को इल्म था कि इमामे हसन असकरी (अ0) ही के सुल्ब से उस आख़री इमाम की पैदाईश होगी। इसलिए इमाम अली नकी (अ0) के इन्तेक़ाल के फ़ौरन बाद अब्बासी ख़लीफा ने दाइयों की एक टीम इमाम के घर में भेजी ताकि यह पता लगाया जाए कि इमाम के घर में कोई औरत गर्भवती तो नहीं और जब उन औरतों ने रिपोर्ट दे दी कि इमाम के घर में किसी भी औरत में गर्भ की निशानी नहीं है तो इमामे हसन असकरी को फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया गया ताकि उस आख़री इमाम की पैदाईश मुमकिन न हो सके, जिसे इमामे हसन असकरी के सुल्ब से आना है। मगर कुदरत के इन्तिज़ामों का कौन मुक़ाबला कर सकता है। जिस तरह फिरऔन ने पूरी कोशिश कर डाली कि जनाबे मूसा (अ0) दुनिया में न आ सकें मगर जब कुदरत ने अपना एख़्तियार दिखलाया तो उसके ही हाथों से मूसा (अ0) को परवरिश दिलवा दी। यहाँ खुदाई ने करवट बदली और मुसबेबुल असबाब ने असबाब फ़राहम कर दिये।

सामरा में ज़माने से बारिश नहीं हुई, सूखे के आसार पैदा हो गए, एक ईसाई राहिब आता है और कहता है कि ईसाई मज़हब हक़ है और सबूत यह है कि मैं दुआ करूँगा और बारिश हो जाएगी। बारिश हुई और कमज़ोर ईमान वालों का ईमान ख़तरे में पड़ गया, अक़ीदे डाँवाडोल होने लगे कि नाएबे रसूल ख़लीफ़-ए-वक़्त ने दुआ

माँगी बारिश नहीं हुई, बड़े-बड़े मुकद्दस दरबारी उलमा ने गिड़गिड़ाकर दुआएँ माँगी मगर कबूल नहीं हुईं लेकिन एक ईसाई आलिम ने सिर्फ दुआ के लिए हाथ उठा दिये तो घटाएँ झूम कर आ गईं। इस वाक़े से हुकूमत के तख़्त हिलने लगे, ऐवाने हुकूमत में ज़लज़ला आ गया। जब इस्लाम ही नहीं रहेगा तो इस्लाम के नाम पर हुकूमत कैसे करेंगे? इसलिए अब इस्लाम का मुहाफ़िज़ याद आया। अब वारिसे रसूल (स०) की याद आई। दरबारियों ने ख़लीफ़-ए-वक़्त को याद दिलाया कि अगर इस्लाम को बचाना है तो हसन असकरी को लाया जाए। इमाम (अ०) को कैदख़ाने से आज़ाद किया गया। इमाम (अ०) तशरीफ़ लाए और उस ईसाई राहिब के राज़ को ज़ाहिर किया कि उसकी उंगलियों के बीच किसी नबी की हड्डी दबी हुई है इसलिए जब यह दुआ के लिए हाथ उठाता है तो रहमते इलाही को जोश आता है और बारिश शुरू हो जाती है। ईसाई राहिब के हाथ से हड्डी लेकर दफन कर दी गयी। अब रसूल के बेटे ने दुआ के लिए हाथ उठाए, घटाएँ झूमकर आने लगीं और जल-थल भर गए इस तरह दुनिया ने देख लिया कि रसूल का गोश्त व पोस्त कौन है। लोग इमाम (अ०) के दीवाने हो गए। अब ख़लीफ़-ए-वक़्त की हिम्मत न थी कि इमाम (अ०) को दोबारा कैदख़ाने में भेज सके इसलिए थोड़े वक़्त के लिए उसे इमाम (अ०) को आज़ाद करना पड़ा और इस तरह आख़री इमाम (अ०) की पैदाईश के असबाब फ़राहम हो गए और दुनिया क़यामततक के लिए जिहालत और कुफ़्र की मौत मरने से बच गई।

इमाम (अ०) का एक और ज़बरदस्त एहसान यह है कि कैद की हालत ही में शरीअते

हक्का के अहकाम को इकट्ठा किया और इमाम (अ०) के निगरानी में फ़िक़ह के बहुत से नामुकम्मल हिस्से मुकम्मल हुए। जैसे बाबे रिज़ाअत, बाबे मीरास, बाबे हुदूद व दियात। इसी तरह इमाम (अ०) ने अपने ज़माने ही से उलमा की तकलीद को समझाया और उनकी वह मशहूर हदीस लोगों के सामने आई:—

फ़ुक्हा में से जो नफ़्स पर काबू रखता हो, दीन की हिफ़ाज़त करने वाला हो, हवा व हवस का बन्दा न हो और अपने मौला के हुक्मों को मानने वाला हो, लोगों पर ज़रूरी है कि उसकी तकलीद करें।

आका ने अपने तरीक़े से उलमाए दीन की अहमियत को सामने किया इसलिए रवायत में है कि जब कोई आलिम आता था तो आप उसकी इज़्ज़त के लिए उठ जाते थे। लोग हैरान होकर पूछते थे कि रसूल (स०) के फ़रज़न्द (बेटे) आपने इस शख्स की इतनी इज़्ज़त क्यों की? तो मौला जवाब में फ़रमाते थे कि यही उलमा होंगे जो हमारी शरीअत की हिफ़ाज़त करेंगे और यही उलमा होंगे जो हमारी मुहब्बत का चिराग़ लोगों के दिलों में रौशन करेंगे। लोगों को उलमा की तरफ़ आने की धीरे-धीरे आदत पड़े इसके लिए इमाम (अ०) ने अपने नाएब मुक़र्रर फ़रमाए और लोगों को सख़्ती से ताकीद कर दी कि सीधी तरह मुझ तक न आओ बल्कि खुम्स की रक़म भी उन्हीं नाएबों की ख़िदमत में पेश करो और मसाएल भी उन्हीं से पता करो ताकि आम लोगों को उलमा से जुड़ने की धीरे-धीरे आदत पड़े क्योंकि आख़री इमाम के ज़हूर तक अब दुनिया को इन्हीं उलमाए हक़ के दामन से जुड़े रहना है। देखा जाए तो इमामे हसन असकरी ने अपनी सीरत, कारनामों और कुर्बानियों से इस्लाम के क़िले को

क्यामत तक के लिए मजबूती अता कर दी।

हमारे आका की उम्र मुबारक कुल 28 साल की थी कि धोके के ज़हर से शहादत पाई। मगर शहादत के बाद भी जुल्म का सिलसिला बन्द नहीं हुआ और आज तक बाकी है और इमाम (अ0) के रौज़े को बहुत ही ज़ालिमाना अन्दाज़ में अमरीकन और यहूदी एजेंटों ने बमों से मिसमार कर दिया। इस रौज़े में चार मुक़द्दस क़ब्रें हैं, इमामे हसन असकरी (अ0) के अलावा दसवें इमाम अली नकी (अ0), हकीमा ख़ातून और इमामे हसन असकरी (अ0) की माँ भी यहाँ दफन हैं। नाम किसी का भी इस्तेमाल हो मगर हकीक़त यह है कि असल में यह अमरीकी और यहूदी साज़िश थी। अगरचे कुछ खुदग़रज़ लोग जिसमें कुछ मोलवीनुमा भी शामिल हैं अपने ज़ाती फ़ाएदों के लिए अमरीका और सेहूनीयत को शीओं का सबसे बड़ा दोस्त साबित करने पर अड़े हैं जबकि असलियत यह है कि असल दुश्मन तो वह हमारे ही हैं क्योंकि इस्लाम का असली सरमाया तो हमारे पास है। इसीलिए इराक़ में बज़ाहिर नाम अलकाएदा वगैरा का है मगर असल में पीछे से इस्लाम दुश्मन ताक़तें काम कर रही हैं जिनमें अमरीका और इसराईल आगे-आगे हैं। हमारे ही कुछ मोलवी ‘सद्दाम’, ‘अलकाएदा’, ‘तालिबान’ वगैरः का नाम ले-ले कर अमरीका के दामन को बचाना चाहते हैं यह वही बुरी और नाकाम कोशिश है जो यज़ीद को चाहने वाले उसके दामन को क़त्ले इमाम हुसैन (अ0) से बचाने के लिए किया करते हैं कि असली कातिल तो उमरे सअ्द, इब्ने ज़ियाद व शिम्र वगैरः है इसलिए उनको बुरा-भला कह लीजिये मगर यज़ीद को आप लोग क्यों बुरा कहते हैं वह तो हज़ारों मील दूर बैठा हुआ था

उसका क्या क़सूर है? उसी तरह से अमरीका और इसराईल का नमक खाने वाले मोलवी भी यही दलील पेश करते हैं कि जुल्म तो सद्दाम ने किए, जुल्म तो अलकाएदा और तालिबान कर रहे हैं इसलिए जितना बुरा-भला कहना है वह उनको कहिये बेचारे बुश की क्या ग़लती है? इस तरह से इस खुली हुई हकीक़त पर पर्दा डालने की नाकाम कोशिश करते हैं देखना है कि इन सबका आका कौन है? यह किसके एजेंट हैं और किन के इशारों पर जुल्म कर रहे हैं। सद्दाम ने जितने भी जुल्म किए वह अमरीका ही की पॉलीसी के तहत और अलकाएदा और तालिबान को जन्म देने वाला सिवाए अमरीका के और कौन है? इस तरह की बातों का जवाब ख़्वाजा हसन निज़ामी ने क्या ख़ूब दिया है। जब किसी ने आपके सामने कहा कि यज़ीद पर क्यों लानत होती है वह तो शाम में हज़ारों मील दूर बैठा हुआ था। अगर लानत के काबिल है तो वह लोग जो कर्बला में इमाम हुसैन (अ0) के क़त्ल में शरीक थे तो उन्होंने फरमाया कि ऐ शख्स तेरी अक़ल तो कुत्ते से भी बदतर मालूम देती है। उसने घबराकर पूछ यह कैसे? तो फरमाया देखों अगर कोई कुत्ते पर ढेला मारता है तो कुत्ता ढेले की तरफ नहीं दौड़ता बल्कि उस शख्स पर हमले की कोशिश करता है जिसने ढीला फेंका है। तेरी अक़ल में इतना भी नहीं आया कि असल सबब कौन था? क़त्ल का मन्सूबा बनाने वाला तो यज़ीद ही था। अगर फौज की जीत को बादशाह की जीत कहा जाएगा तो अगर किसी के हुक्म से क़त्ल हो तो कातिल तख़्ते हुकूमत पर बैठने वाला ही कहा जाएगा।



इमामे हसन असकरी (अ०)

की हयात और उनके कारहाए नुमायाँ पर एक नज़र

इमादुल उलमा अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िल्बा
अनुवादक — मोहतरमा बिनते ज़हारा नक़वी साहेबा

दसवें इमाम हज़रत अली नक़ी (अ०) के लायक़ बेटे हज़रत इमाम हसन असकरी (अ०) की पैदाईश मुबारक 10 रबीउस्सानी 232 हि० को मदीना मुनव्वरा में हुई। आपका मुबारक नाम "हसन" और कुनियत "अबुमुहम्मद" थी चूँकि आपकी ज़िन्दगी का ज़ियादा हिस्सा सामरा के करीब "असकर" नामी लश्करगाह में कैदी की हैसियत से बसर हुआ इसलिए आप असकरी के लक़ब से मशहूर हुए।

इमाम (अ०) की ज़िन्दगी के शुरू के ग्यारह साल वालिदे बुजुर्ग के साथ मदीने में गुज़रे। उसके बाद हुकूमत ने इमाम नक़ी (अ०) को मदीना छोड़ने पर और इराक़ जाने पर मजबूर किया।

चुनानचे इमाम हसन असकरी (अ०) भी अपने बुजुर्ग बाप के साथ तमाम सख़्तियाँ बर्दाश्त करते हुए सामरा पहुँचे। सामरा में इमाम अली नक़ी (अ०) जिस जगह कैद थे इमामे हसन असकरी भी वहीं आपके साथ थे। इमाम (अ०) ने तमाम हक़ाएक़ व मआरिफ़ अपने आली क़दर बाप से हासिल किए। 254 हि० में इमाम अली नक़ी (अ०) की शहादत के बाद 22 साल की उम्र में इमामत के मन्सब पर फाएज़ हुए। इमाम अली नक़ी ने अपनी शहादत से छः महीने पहले अपने असहाब व रिश्तेदारों के बीच आपकी इमामत का एलान फरमा दिया था।

इमाम हसन असकरी (अ०) के ज़माने के सियासी हालात

जब इमाम (अ०) ने इमामत की ज़िम्मेदारी संभाली उस वक़्त अब्बासी ख़लीफा मुअ्तज़बिल्लाह साहेबे एकतेदार था। मुअ्तज़ के हटाए जाने के बाद

मुह्तदी बिल्लाह ने ग्यारह महीने हुकूमत की फिर वह भी मुअ्तमिद के ज़रिए हटा दिया गया। अगरचे यह ज़माना वह था कि जब अब्बासी हुकूमत अन्दुरुनी कशमकश और गिरोहबन्दी की सख़्तियाँ झेल रही थी। फिर भी यह सारे गिरोह हकीकी इस्लाम और उसके सच्चे रहनुमाओं के ख़िलाफ़ एक थे। इमामे रिज़ा (अ०) की शहादत के बाद हुकूमत ने मज़हबे हक़का की इमामों पर सख़्त निगरानी और ग़ैर मामूली सख़्तियाँ शुरू कर दी थी। यह निगरानी और सख़्ती ग्यारहवें इमाम पर कई गुना ज़ियादा थीं। और यह इसी बिना पर थी कि उस दौर में रसूलुल्लाह (स०) की यह हदीस लोगों की जुबान पर थी कि:— "ग्यारहवें इमाम का बेटा ज़ालिम हुकूमत का खात्मा कर देगा। और दुनिया में हक़ व अदालत का निज़ाम काएम करेगा।" यही वजह थी कि हुकूमत की लगाम जिसके हाथों में भी होती थी वह इमामे हसन असकरी (अ०) को कैदाख़ाने में रखता था। अब्बासी हुकूमरान जानते थे कि मुसलमानों के हकीकी रहबर और पैग़म्बर के हकीकी जानशीन यही अईम्मा हज़रात हैं।

इमामे हसन असकरी (अ०) बरहक़ जानशीनों की ग्यारहवीं कड़ी हैं कि जिनके बाद ही महदी मौऊद का ज़माना शुरू होता है इसी बुनियाद पर लोग ग्यारहवें इमाम को एक लम्हा के लिए भी आज़ाद छोड़ने और निगरानी में कमी करने पर तैयार नहीं थे और मुस्तक़िल हज़रत को लश्करगाह (असकर) में रखते थे। सिर्फ़ जब हुकूमत वाले बदलते थे तो उस दौरान मामूली सी आज़ादी (वह भी सख़्त निगरानी में) हासिल होती थी। जैसे ही नया हाकिम हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में ले लेता था, हज़रत को दोबारा

कैद कर लिया जाता था। मुअ्तमिद के ज़माने में इमाम (अ0) और उनके शीओं पर जुल्म व सितम और निगरानी अपने शबाब पर थी बावजूद इतने बिगड़े हुए हालात और मुसीबतों के इमाम हमेशा फराएजे हिदायत व इमामत अन्जाम देते रहे। जिस वक़्त इमाम असकरी (अ0) कैद में थे उस वक़्त उम्मत और इमाम के बीच ताल्लुक के लिए नुमाइन्दे लगे हुए थे लेकिन उन पर भी हर वक़्त हुकूमत की भरपूर नज़र रहती थी और कभी-कभी तो इन मामलों की नुमाइन्दगी को अन्जाम देने के लिए नुमाइन्दों को सियासी और समाजी काम भी अन्जाम देने पड़ते थे जैसे जनाबे उस्मान बिन सईद और उनके फ़रज़न्द अबूजाफ़र मुहम्मद बिन उस्मान जो इमाम के खास नुमाइन्दे थे उन्होंने बग़दाद में दुकान खोली ताकि उनसे मिलने वालों पर हुकूमत शक में न पड़े यह उन मुख़ालिफ़ किस्म की हिक्मते अमली और काम करने के तरीकों में से एक नमूना है जो एख़्तियार किया गया। इस तरह उमवी और अब्बासी हुकूमत के सख़्ती भरे माहोल में नुमाइन्दों ने मासूम इमामों की हिदायत में पयामे हक़ के चिराग़ को रौशन रखा। और जो मुस्तक़िल फ़राएज़ अन्जाम दिये हैं उनमें शीओं के सियासी मुआमलात में रहनुमाई, इज्तेमाओ मसाएल में रहबरी, खुम्स की वसूली, मआरिफ़े इस्लामी की इशाअत और इमाम व उम्मत के बीच ताल्लुक व जोड़ का अहम रोल अदा करना है।

मआरिफ़े इस्लामी के फैलाने में इमाम (अ0) का किरदार

अगरचे इमामे हसन असकरी (अ0) ने सिर्फ़ 28 साल की उम्र पाई मगर फिर भी मआरिफ़े इस्लामी की तबलीग़ व तरसील में बहुत बड़ा किरदार अदा किया। एक तरफ़ तो बड़े-बड़े नामवर शार्गिद तैयार किये और दूसरी तरफ़ जबकि यूनान, हिन्दुस्तान और क़दीम ईरान की ग़लत सोंच और ख़यालात इस्लामी समाज में फैल रहे थे। इमाम (अ0) पिछले मासूम इमामों की तरह इस फिर जाने वाले और गुमराही भरे अक़ीदों और ख़यालों के मुक़ाबले में खड़े हुए और बड़ी समझदारी वाले अन्दाज़ में हक़ीक़ी इस्लाम की हिफ़ाज़त फरमाई।

“इस्हाक़ कन्दी” कुआन के तज़ाद के बारे में किताब लिख रहा था। इमाम (अ0) को यह ख़बर मिली तो आप ठीक वक़्त का इन्तिज़ार करने लगे। एक दिन “कन्दी” के कुछ शार्गिद इमाम (अ0) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत ने उन लोगों से फरमाया कि क्या तुम में से कोई ऐसा है जो अपने उस्ताद को इस बक़वास कोशिश से अलग रख सके? इसके बाद इस सिलसिले में कुछ उमदा और बारीक बातें भी इरशाद फरमाई। जब “कन्दी” के शार्गिदों ने वह बातें उस्ताद की ख़िदमत में पेश कीं तो वह हैरान रह गया। उसने पूछा कि उन नुकात को कौन सामने लाया है? आख़िरकार उन सब ने कबूल किया कि हमें यह बातें “अबु मुहम्मद” ने सिखाई हैं। फिर “कन्दी” ने भी कबूल कर ही लिया कि सिवाए खानदाने रिसालत के कोई भी इन गुमराहियों को रोक नहीं सकता था। फिर उसने कुआन के ख़िलाफ़ अपनी तमाम किताबों को आग में जला दिया। यह वाक़ेआ इमाम आली मक़ाम (अ0) के इल्मी व फ़िक़्री कोशिशों का एक बेहतरीन नमूना है।

हदीस के ज़ख़ीरों में बहुत सी हदीसों इमाम हसन असकरी से नक़ल हुई हैं उनमें से पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की मशहूर तरीन हदीस यह है कि “शराबी, शिर्क करने वाले और बुत की पूजा करने वाले की तरह है।”

इस रवायत को इमामे हसन असकरी ही के ज़रिए इब्ने जौजी ने “तहरीमुल ख़म्र” में और अबुनईम फज़ल बिन वकीन ने नक़ल करने के बाद लिखा है कि यह हदीस सही है इसलिए कि अहलेबैते रसूल (अ0) के वास्ते से आई है।

सम्आनी “किताबुल अबसार” में लिखता है कि “अबु मुहम्मद अहमद बिन इब्राहीम बिन हाशिम तूसी बलाज़री हाफ़िज़ वाअिज़ ने इस हदीस को इमाम अबु मुहम्मद हसन बिन अली बिन मुहम्मद बिन अली बिन मुसार्रिज़ा से सुना है।”

इमाम (अ0) के कुछ मशहूर शार्गिद

1— अबुहाशिम दाऊद बिन कासिम जाफ़री, जो

इमाम के नब्बाब और नुमाइन्दों में से एक थे और उन्होंने चार इमामों का ज़माना देखा है।

- 2— दाऊद बिन अबी जैद नीशापूरी।
- 3— अबु ताहिर मुहम्मद बिन अली बिन हिलाल।
- 4— अबु अब्बास बिन जाफर हुमैज़ी कुम्मी, जो अपने ज़माने के बुजुर्ग उलमा में से थे। इनकी अहम किताब “करबुल अस्नाद” है जो किताबे काफी का ख़ास माख़ज़ है।
- 5— मुहम्मद बिन अहमद बिन जाफर कुम्मी, आप भी इमाम (अ0) के नाएबों में से थे।
- 6— जाफर बिन सुहैल सैकल।
- 7— मुहम्मद बिन हसन सफर कुम्मी, आप अपने दौर के पहली सफ के उलमा में शुमार होते थे और बहुत सी किताबों के लेखक थे उनमें से “बसाएरुद्दरजात” मशहूर है।
- 8— अबु जाफ़र हमानी बरमकी।
- 9— इब्राहीम बिन अबुहफज़ अबु इस्हाक़ कातिब।
- 10— इब्राहीम बिन महेरयार, साहेबे “किताबुल बशारात”।
- 11— अहमद बिन इब्राहीम बिन इस्माईल बिन दाऊद हमदानी अलकातिब, अन्नदीम, अदब व फ़िक़ह के बुजुर्ग उस्ताद थे।
- 12— अहमद बिन इस्हाक़ अलअश्अरी अबु अली अलकुम्मी, यह भी मुमताज़ उलमा में से थे इन्होंने कई किताबें लिखीं। जिनमें से एक किताब “इललुस्सौम” है।

यह कुछ नाम उन बुजुर्ग उलमा के हैं जिन्होंने ग्यारहवें इमाम की बारगाह से फाएदा हासिल किया। और इस्लामी उलूम के फैलाव व बढ़ोत्तरी और हकीकी इस्लाम की तालीम और मज़हबी समाज की फ़िक़्री रहनुमाई के लिए कोशिशें की हैं। इमामे हसन असकरी (अ0) ने कुर्आने मजीद का भी सबक़ दिया। जिसकी बुनियाद पर “अबु अली हसन बिन ख़ालिद बिन मुहम्मद बिन अली बर्क़ी” ने एक ऐसी तफ़सीर लिखी जो एक

सौ बीस (120) हिस्सों में थी।

अफ़सोस कि आज यह किताब मौजूद नहीं है। लेकिन बहुत सी रवायतें जो कुर्आने मजीद की आयतों की तफ़सीर में मोतबर इस्लामी किताबों में पाई जाती हैं इसी किताब से लिखी गई हैं।

“तोहफ़ुल उकूल” में इस्हाक़ बिन इस्माईल अलअश्अरी के नाम इमाम (अ0) का एक तफ़सीली रिसाला है जिसमें इमाम (अ0) के छोटे-छोटे कलेमात भी लिखे हैं। इन इल्मी व फ़िक़्री कारनामों के अलावा सियासी मैदान में भी इमाम (अ0) ने मिसाली कारनामे अन्जाम दिये हैं और हमेशा इस्लामी ख़यालात फैलाने के लिए लगे रहे। और यही वजह थी कि इमाम (अ0) को अपनी कैद में रखते हुए भी अब्बासी हुक्मरान इतना डरते थे कि इमाम (अ0) की जान के पीछे पड़ गए इसकी वजह यह है कि हकीक़त ज़ंजीरों में जकड़ी हुई भी हो बातिल के वजूद के लिए एक बड़ा ख़तरा होती है। बातिल परस्तों का यह उसूल है कि वह हकीक़त के सितारे को डुबाने के लिए कोशिश करते हैं लेकिन अगर एक सितारा डूबता है तो उसकी जगह पर दूसरा निकल कर अंधेरों के पुजारियों को मुकाबले की दावत देता है और एक शमअ से कई शमअें रौशन होती चली जाती हैं। इसी तरह इमामे हसन असकरी (अ0) हक़ फैलाने वालों में के ग्यारहवें बड़े पेशवा 260 हि0 में अब्बासी ख़लीफ़ा मुअ्तमिद की साज़िशों के तहत धोके से ज़हर देकर शहीद हुए। और अपनी जगह बातिल को तोड़ने वाले और इन्साफ़ काएम करने वाले इमामे महदी (अ0) को छोड़ गए ताकि सुन्नत के मुताबिक़ हक़ परस्तों की रवायत को ज़िन्दा रखें और आख़िरकार एक दिन बातिल की बिसात को उलट कर दज्जाली ताक़तों का ख़ात्मा करके अदल व इन्साफ़ से दुनिया को भर दें।

“अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0)”

□□□

एक इमाम

दबदबे का नाम

मु० र० आबिद

शहर की एक खुली जगह.....किल्कारियाँ भरते कुछ बच्चे खेलते हुए। वहीं एक बराबर का प्यारा बच्चा कुछ अलग-थलग सा रोता हुआ। इसी में एक प्यार का दीवाना, समझदारी का खज़ाना उधर से गुज़रता है। बहलाने के अन्दाज़ में रोते हुए बच्चे को खिलौना ला देने को कहता है। लेकिन बच्चा कहता है कि रोना तो इसी पर है कि यह खेल-खेल में ज़िन्दगी बर्बाद कर रहे हैं। हम इसलिए नहीं पैदा हुए हैं।

‘हायँ! तो फिर किस लिए पैदा हुए हैं?’ ‘इबादत के लिए’ ‘यह कैसे पता चला?’ ‘क्या आपने कुर्आन नहीं पढ़ा है:— क्या तुमने यह समझ लिया है कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है और क्या तुम हमारी ओर पलटकर नहीं आओगे?’ (ओह! बातों का यह स्तर, सोंच की यह उठान, दीन का यह ध्यान, कुर्आन की इतनी गहरी नज़र,.....और इतनी छोटी उम्र!!) ‘लेकिन आप तो बहुत छोटे हैं। आपके लिए गुनाह सोचा भी नहीं जा सकता। आप क्यों रो रहे हैं?’

‘छोटे होने से क्या? मैंने देखा है कि मेरी माँ बड़ी लकड़ियों को सुलगाने के लिए छोटी लकड़ियाँ/खपच्चियाँ लगाती हैं। मुझे डर है कि कहीं जहन्नम के बड़े ईंधन के लिए हम छोटे बच्चों को न लगा दिया जाए।’

धर्म दर्शन का यह सबक पढ़ाने वाला बच्चा कोई और नहीं हमारे ग्यारहवें इमाम हसन असकरी (अ०) थे और वह बात करने वाले थे बहलोल दाना।

यह था बचपन से आपका दबदबा, पैदाइशी, स्वभाविक दबदबा, खुदाई दबदबा।

इमाम की नौजवानी है। सम्राट मुस्तईन अब्बासी का राज है। वह आपके पिताश्री इमाम अली नकी (अ०) को कैद कर चुका है और आप दोनो बाप-बेटों को सताने की भरसक कोशिश में लगा हुआ है। उसने एक बड़ा महंगा घोड़ा लिया। लेकिन वह बहुत शरीर, सरफिरा निकला, किसी को भी सवारी न देता बल्कि जो भी पास आता उसे पटककर टापों से कुचल डालता। एक दरबारी के कहने पर मुस्तईन ने यह घोड़ा इमाम को दिया कि सवारी करें (यह सोच कर कि अगर वह घोड़ा इमाम का भी काम तमाम कर देता है तो उसकी दिली मुराद आ जाएगी वरना वह इस बहाने राम हो जाएगा तो भी एक मतलब निकल आयेगा यानी पट भी उसकी चट भी उसकी।) इमाम (अ०) से घोड़ा राम हो गया और भीगी बिल्ली बन गया। यह था इमाम का दबदबा, घुड़सवारी की महारत का दबदबा, खुदाई दबदबा जिससे जानवर तक राम हो जाया करते थे। बहरहाल मुस्तईन पर इमाम का दबदबा इतना छा गया कि वापस घोड़ा लेने के बजाए इमाम ही को दे दिया।

इस्हाक कन्दी उस वक़्त का एक बहुत बड़ा विद्वान, दार्शनिक और वैज्ञानिक था। उसने कुर्आने मजीद की आयतों और उसकी बातों (विषयों में) आपसी टकराव साबित करने की ठानी। इमाम (अ०) को मालूम हुआ तो उसके

कुछ चेलों से कहा कि उसे इस काम से बाज़ आने को कहें। उन्होंने कहा कि वह उनका गुरु है उससे कैसे कह सकते हैं। इमाम (अ०) ने कहा कि अच्छा यह काम तो कर सकते हो कि पहले उसके बहुत क़रीबी हो जाओ और जब वह तुम पर पूरा-पूरा भरोसा करने लगे तो बातों-बातों में उससे पूछो कि अगर कुर्आन का लेखक (अल्लाह) आपके पास यह किताब लाए। तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उससे जो मतलब आप समझें उसका आशय या मतलब वह न हो बल्कि उसके अलावा हो? वह समझदार है इसलिए वह हाँ में जवाब देगा। अगर ऐसा हो तो उससे कहना कि फिर आप जो अपनी समझ से उसमें आपसी टकराव साबित करने में लगे हैं वह बेकार नहीं हो जाता। उन चेलों ने वैसा ही किया और वैसे ही कहा। वह चूँकि बड़ा समझदार था उसने उन चेलों से पूछा कि सच-सच बताओ यह बात किसने बतलायी। उन लोगों ने कहा किसी ने नहीं बल्कि उनके अपने मन में आयी। लेकिन वह नहीं माना कि उनकी सोच से यह बहुत ऊँची बात है। बहुत कहने पर उन लोगों ने इमाम (अ०) का नाम ले लिया। उसने कहा कि हाँ अब तुमने सही बात बताई। और यह बात उस घर के अलावा कोई नहीं सोच सकता। उसने उसी समय अपनी किताब का पूरा मसौदा (पाण्डुलिपि) मंगाया और उसमें आग लगा दी। इस तरह इमाम की सूझबूझ ने कुर्आन के खिलाफ एक बहुत बड़े दार्शनिक और बुद्धजीवी (Intellectual) तूफ़ान को टाल दिया। यह है इमाम के ज्ञान, दर्शन और सूझबूझ का दबदबा।

इमाम (अ०) के नाम, शान और सामाजिक गौरव व हैसियत का दबदबा ही था कि डांवाडोल राज के एक के बाद एक गद्दी हत्याने वाले ने

राजनीति से दूर रहने वाले सज्जनता, नेकी और शालीनता की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले इमाम (अ०) को सताने में कोई कसर न उठा रखी। इमाम को कभी जेल की काली कोठरी में, कभी घर में ही बन्दी बनाकर, कभी जासूसों के पहरे में और कभी सरकारी पहरे के कटघरे में रखा गया, कभी चैन की साँस न लेने दी गयी। लेकिन इमाम के धैर्य, सब्र, सहन शक्ति, चाल-चलन, शालीनता और इबादत के दबदबे के आगे कभी पहरेदारों का सारा क्रूर चकनाचूर और बेदर्दी चित हो जाती, कोई सताते-सताते थक हार कर माफ़ी माँग लेता।

इसी बीच 869 ई०/256 हि० में पिछले तीन साल से पड़ने वाले सूखे का भयानक रूप सामने आता है। जनता भूक प्यास से मर रही है। लोग नमाज़, दुआ और इस्तेस्का (पानी माँगने की खास नमाज़) की नमाज़ पढ़ते-पढ़ते थक चुके लेकिन सूखा जाने का नाम नहीं लेता। ऐसे में एक ईसाई सन्यासी आता है दुआ करता है, घटाएँ धिर-धिर कर बरसती हैं, जल थल हो जाता है। देखते-देखते लोगों के मन धर्म ईमान से फिरने लगते हैं। इस्लाम के नाम पर चलाने वाले राज्य को दिन में तारे दिखाई देने लगते हैं। पैरों के नीचे की ज़मीन खिसकते दिखाई देती है। गद्दी उसी पानी में बहती दिखाई पड़ती है। कुछ समझ में नहीं आता। सारी अकलें चरने चली गईं। एक ही रास्ता सूझता है। इमाम (अ०) को जेल से निकाला जाता है कि कुछ रास्ता बताएँ। आप देखते हैं। सन्यासी से फिर दुआ करने को कहते हैं। जब वह दुआ करने को हाथ उठाता है घटाएँ फिर धिरने लगती हैं। इमाम कहते हैं कि इसके

बक़ियापेज 14 पर

“और तक़वे का पहनावा ही अच्छा भला है।”

(सूर-ए-आराफ़)

घर और समाज में खुदा का डर

(तक़वा)

(पिछले शुमारे से आगे)

हुस्नतुल्ला इस्लाम प्रो० हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु० र० आबिद

असल तक़वे की पहचान

दीनी बुजुर्ग, महान धर्मात्माओं ने कुर्आन मजीद की आयतों और रिवायतों की रौशनी में तक़वे वालों की पहचान नीचे लिखे मसलों में महसूस की हैं:-

□ एक बालिग़ (व्यस्क) और समझदार आदमी दीन-शरीअत (धर्म विधान) की जानकारी इस हद तक पाये जितनी आमाल (कर्म), चाल-चलन, बर्ताव और घर व समाज से जुड़े रहने के लिए ज़रूरी महसूस होती है।

□ जिस्म को ठीक रखने के उसूलों (Hygeine) से बदन की हिफ़ाज़त और खाने-पीने के अदब तमीज़ (शिष्टाचार) का लेहाज़ करना।

□ ज़िन्दगी से जुड़े मुद्दों, समझदारी, तेज़ी व होशियारी, ज़िन्दगी के हर मैदान में ईमानदारी बरतना, मन की पाकी की हिफ़ाज़त, सच बोलना, अच्छे आचरण, नीच बातों से पाक होना, दोगली चाल और दिखावेपन से अलग रहना, फ़जूल यानी ज़ियादती की चीज़ों की बढ़मार से अलग-थलग रहना, बेईमानी, खोट, मक्कारी से

पाक होना, आलिमों, विद्वानों की इज़्ज़त करना, दीन के वाजिब और सुन्नत कामों को करना, दीनी आलिमों, धर्मगुरुओं से जुड़े रहना, जो आदमी को खुदा, मज़हब और हलाल-हराम बताते हैं वे सिर्फ़ इन्सान का कमाल और तरक्की ही चाहते हैं, दीनी आलिमों को छोड़ दूसरों से जुड़ने में मरन है।

इमाम जाफ़र सादिक़ (अ०) खुदा वाले आलिमों से लगाव के सिलसिले में फ़रमाते हैं:-

‘झूठ बोलने वाले की एक पहचान यह है कि वह तुम्हें ज़मीन व आसमान की बातें सुनाता है, लेकिन जब उससे हराम व हलाल के बारे में पूछा जाता है तो उसके पास कोई जवाब नहीं होता।’

संयमी और तक़वे वाले लोगों की भी बहुत सी पहचानें हैं:-

वे हादिसों आपदाओं पर सब्र (धैर्य) करते, हर काम में इस्लामी तौर तरीकों का लिहाज़ करते हैं, सदा खुदा को याद रखते हैं, उनकी नियत साफ़, ख़ालिस निर्मल रहती है, उनका अन्तर्मन

(बातिन) साफ़ सुथरा होता है, नेकी से लापरवाही नहीं करते और इस रास्ते पर चलने की नतीजे में वे निश्चय-ज्ञान (इल्मुलयकीन-जानकारी से यकीन करना) तक और निश्चय ज्ञान से निश्चय-दर्शन

(ऐनुलयकीन-देखकर यकीन करना) तक और उसके बाद निश्चय-दर्शन से निश्चय-सत्य (हक्कुलयकीन-यकीन का सत्य) तक पहुँच जाते हैं।
(जारी)

बक़िया.....

एक इमाम—दबदबे का नाम

हाथ में जो चीज़ दबी है वह ले ली जाए। उसकी उंगलियों के बीच एक हड्डी थी वह ले ली जाती है और इसे इमाम दफ़न कर देते हैं। अब उससे दुआ करने को कहा जाता है। अब तो घिरी हुई घटाएँ भी छटने लगती हैं। दूर-दूर तक कहीं भी एक बून्द दिखाई नहीं पड़ती। पूछने पर इमाम (अ0) बताते हैं कि यह एक नबी की हड्डी है और ऐसी हड्डी में यह असर होता है कि जब भी यह आसमान के नीचे लायी जाएगी तो रहमत की बारिश ज़रूर होगी। सन्यासी की दुआ का सारा राज़ इमाम (अ0) के ज्ञान ध्यान और सूझबूझ के दबदबे से खुल गया। अब इमाम (अ0) ने दुआ की, पानी बरसा ख़ूब बरसा, सूखा हरन हुआ। लोगों में ईमान निष्ठा का सूखता हुआ बीज फिर से लहलहाती खेती के रूप में लहलहाने लगा।

अब इमाम के दबदबे के आगे बादशाह (मोअ्तमिद अब्बासी) को इमाम को जेल से छोड़ने के अलावा कुछ न बन पड़ा। अब इमाम की शान, दबदबा, जनप्रियता, और मान सम्मान और भी बढ़ गया, बल्कि बढ़ता रहा। इमाम के चाल-चलन की धाक वज़ीरों और राजदरबारियों तक पहुँच

चुकी थी। एक ही साल आज़ादी की साँस ले सके कि बादशाह अपनी पुरानी सूरत में आ गया और आपको फिर काल-कोठरी में बन्द कर दिया गया। यह दबदबे के ख़िलाफ़ सरकारी आतंक का एक रूप था। पर काल-कोठरी इमाम (अ0) के किरदार, इबादत, मान सम्मान, शान, साख के दबदबे को कम न कर सकी बल्कि और बढ़ावा ही दे गई। आख़िरकार मोअ्तमिद ने चाल से इसी जेल में इमाम को ज़हर दिलाया। इस तरह खुदाई दबदबे के इस आख़िरी प्रत्यक्ष निशान को दुनिया से मिटा दिया गया।

अब तक के सभी ग्यारह इमाम शहीद हुए, तलवार से या ज़हर से। आख़िरी बारहवें इमाम को खुदा की मसलहत ने ग़ैबत (गोप/अदृश्यता) के पर्दे में रख दिया। जब उसका हुक्म होगा तो ग़ैबत दूर होगी और इमाम (अ0फ0) का ज़हूर होगा और अन्याय, जुल्म से भरी पूरी दुनिया में न्याय, ईमान, धर्म व सत्य का बोलबाला हो जाएगा। अमन चैन, सुख, समृद्धि का राज्य हो जाएगा। दुनिया से बेचैनी, अन्याय, दुख, संकट, जुल्म, ज़ोर ज़बरदस्ती, आतंक, बेईमानी आदि सारी बुराइयाँ दूर हो जाएँगी। खुदाई दबदबे का दबदबा होगा। खुदा करे वह दिन जल्दी आए।



इदारा

मुख्य समाचार

अह्या-ए-मकतबतुज्जहरा

लखनऊ। जाकिरे शामे गरीबाँ सफ़वतुल उलमा मौलाना सै० कल्बे आबिद नक़वी रहमतमआब (रह०) ने शहरे लखनऊ में कहीं भी ख़वातीन के लिए दीनी तालीम का इन्तिज़ाम न होने की वजह से पहली जनवरी 1984 ई० को अपने ही शरीअतकदे पर मकतबतुज्जहरा के नाम से मदरसा काएम फरमाया था जो रहमतमआब के इन्तेक़ाल के बाद ख़ात्मे को पहुँच गया। अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र है कि उसकी तौफ़ीक़ से काएदे मिल्लत मौलाना कलबे ज़वाद साहब किब्ला मद्दज़िल्लहुशरीफ़ इसके दोबारा अह्या की तरफ़ मुतवज्जह हुए इसलिए इनशाअल्लाह हज़रत इमामे अम्र (अ०फ०) के बुजुर्ग़ बाप हज़रत इमामे हसन असकरी अलैहिस्सलात वस्सलाम की पैदाईशे मुबारक की तारीख़ यानी 10 रबीउस्सानी 1427 हि० को शरीअतकद-ए-सफ़वतुल

उलमा रहमतमआब, जौहरी मोहल्ला, लखनऊ में मकतबतुज्जहरा का इफ़तेताह काएदे मुअज़्ज़म के हाथों होगा जिसमें अरबी ज़बान, फ़ारसी ज़बान और दीनियात व तजवीद की तदरीस शाम 5 बजे से मग़रिबैन तक और बाद नमाज़ 8 बजे रात तक होगी। मदरसा में मज़मून निगारी और तहकीकी मामलों पर ख़ास ध्यान दिया जाएगा। तालिबात के सरपरस्त हज़रात काएदे मुअज़्ज़म से या नूरे हिदायत फाउण्डेशन, हज़रत गुफ़रानमआब, चौक, लखनऊ-3 से राब्ला काएम फरमाएँ।

मुअल्लिन

सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी ‘असीफ़’ जाएसी
फ़ोन:-0522-2252230 / 09335276180 / 09415752805

गुफ़रानमआब (रह०) इस्लामिक स्टडीज़ सेण्टर

लखनऊ। मुजदिदुशरीअत मुहयुलमिल्लत माहियुल बिदअत कातिउस्सूफ़ियत वलअख़बारियत बह्रुलउलूम आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यद दिलदार अली गुफ़रानमआब रह० (जिन्होंने हिन्दुस्तान में पहला मदरस-ए-फ़िक्ह व इज्तेहाद काएम फरमाया था) की याद में काएदे मिल्लत की सरपरस्ती व निगरानी में मौजूदा ज़माने की ज़रूरतों का ख़याल रखते हुए “गुफ़रान मआब इस्लामिक स्टडीज़ सेण्टर” के नाम से कौम के बच्चों ख़ास तौर पर अंग्रेज़ी स्कूलों के बच्चों के लिए दीनी मदरसा काएम हो रहा है जिसकी शुरुआत इन्शाअल्लाह इब्ने रसूल (स०), फ़र्जन्दे अली (अ०) व बतूल (स०) इमामे राबे सैय्यदुस्साजेदीन हज़रत अली ज़ैनुलआबिदीन अलैहिस्सलात वस्सलाम की पैदाईश के दिन यानी 15 जमादिलऊला 1427 हि० (इसी तारीख़ यानी 15 जमादिलऊला 1424 हि० मुताबिक़ 16 जुलाई 2003 ई० को नूरे हिदायत फाउण्डेशन का क़याम

भी अमल में आया था। 15 जमादिलऊला 1425 हि० मुताबिक़ जुलाई 2004 ई० को “शुआ-ए-अमल” का पहला शुमारा जारी हुआ था) को हुसैनिय-ए-हज़रत गुफ़रानमआब (रह०) में काएदे मुअज़्ज़म के मुबारक हाथों से होगा जिसमें अरबी ज़बान, फ़ारसी ज़बान और दीनियात व तजवीद की तदरीस शाम 5 बजे से मग़रिबैन तक और बाद नमाज़ 8 बजे रात तक होगी। मदरसा में मज़मून निगारी जाकिरी और तहकीकी मामलों पर ख़ास ध्यान दिया जाएगा। दीनी तालीम के ख़्वाहिशमन्द तलबा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, हुसैनिय-ए-हज़रत गुफ़रान मआब, चौक, लखनऊ-3 से जल्द ही राब्ला काएम फरमाएँ।

मुअल्लिन

सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी ‘असीफ़’ जाएसी
फ़ोन:- 09335457155 / 09335276180
09415752805 / 0522-2252230

ईरान के एटमी टेक्नालोजी हासिल करने की कामियाबी के एलान पर अमरीका की तिलमिलाहट

तेहरान। ईरान ने 164 सेण्टीफ्यूजज़ से कामियाबी के साथ यूरेनियम तैय्यार कर लिया है गुलाम रज़ा आगाज़ादे ने टेलीवीज़न पर तक्रीर करते हुए कहा: “मैं फख्र के साथ यह एलान करता हूँ कि हमने 3.5 प्रतिशत तक यूरेनियम तैय्यार कर लिया है जो न्यूक्लियार्ड पावर स्टेशन चलाने के लिए चाहिए।” आगाज़ादे ने यह भी कहा कि: यह बड़ा कारनामा इस बात का सबूत है कि दूसरों के ग़ैर क़ानूनी मुतालबों के खिलाफ़ मज़ाहमत अज़ीम कारनामों के लिए रास्ता बना सकती है।”

ईरान के इस एलान से पश्चिमी देश ख़ास तौर से अमरीका तिलमिला उठा है। रूस ने इस एलान को गुलत दिशा में उठाया गया क़दम बताया था लेकिन ईरान अपने मौक़िफ़ पर कायम है ईरान के सीनियर अफसर ने नाम न ज़ाहिर करने की शर्त पर बताया कि ईरान की न्यूक्लियार्ड सरगर्मियाँ पानी के चश्मे की तरह हैं जिसे रोका नहीं जा सकता।

ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने टेलीवीज़न पर क़ौम को सम्बोधित करते हुए बताया कि नतार के जौहरी प्लाण्ट में न्यूक्लियर फ़्यूल साईकिल कामियाबी के साथ पूरा कर लिया गया है और ईरान बिजली प्लाण्टों के लिए इस्तेमाल होने वाली ताक़तवर यूरेनियम तैय्यार कर चुका है। उन्होंने कहा कि उन का मुल्क कारोबारी पैमाने पर यूरेनियम

तैय्यार करना चाहता है। इस एलान पर ईरानी अवाम ने अल्लाहु अकबर के नारे लगाए। उन्होंने यह भी कहा कि मैं सरकारी तौर पर यह एलान कर रहा हूँ कि ईरान अब उन मुल्कों की सफ में शामिल हो रहा है जिनके पास न्यूक्लियार्ड टेक्नालोजी है यह हमारी कोशिश और मज़ाहमत का नतीजा है और अन्तर्राष्ट्रीय उसूलों के हिसाब से हम अपना काम उस वक़्त तक करते रहेंगे जब तक बड़े पैमाने पर यूरेनियम तैय्यार करने की सलाहियत हासिल न कर लें। डाक्टर अहमदी नेजाद ने कहा मुझे यह एलान करते हुए खुशी हो रही है कि हमने साढ़े तीन प्रतिशत तक यूरेनियम की तैय्यार कर लिया है।

उन्होंने पश्चिमी देशों से कहा कि वह ईरान के एटमी टेक्नालोजी हासिल करने के हक़ को क़बूल करें। ईरान के इस एलान के बाद जहाँ एक तरफ़ अमरीका परेशान है वहाँ दूसरी तरफ़ इस्राईल ने ईरान के ज़रिए कामियाबी के साथ यूरेनियम तैय्यार कर लेने की ख़बर पर मुहतात रद्दे अमल ज़ाहिर करते हुए कहा कि अगरचे इस्राईल को इससे ख़तरा है लेकिन ईरान को क़ाबू में रखने के लिए सिफारती रास्ता ही बेहतर है। मिस्टर शमऊन परीज़ ने कहा कि ईरान का यह एलान “परेशानी में डालने वाला” है लेकिन सब्र व बर्दाश्त से काम लेने की ज़रूरत है।

अल-कुर्आन एजुकेशनल सोसाइटी नई दिल्ली के ख़िदमात में एक और बढ़ोत्तरी

तबसेरा। मौलाना जलाल हैदर नक़वी साहब किब्ला इल्मी व अमली मामलों में मुस्तक़िल जी-जान से लगे रहने वाली शख्सियत हैं। आप अलकुर्आन एजुकेशनल सोसाइटी के ज़रिए कुर्आन मजीद और उसके मुफ़रससीन पर कई सेमिनार और मुज़ाक़रों का इन्क़ाद कर चुके हैं और आगे भी बहुत कुछ करने का इरादा रखते हैं। उम्मीद है कि शीअी दुनिया में उर्दू के पहले मुतरजिम व मुफ़रससर यानी सैय्यदुल मुफ़रससीन आयतुल्लाहिल उज़मा मौलाना सैय्यद अली नक़वी इब्ने मुजदिदे कबीर आयतुल्लाहिल उज़मा हज़रत गुफ़रानमआब और अरबी, फारसी, अबरानी, अवधी और उर्दू में तफ़सीरें लिख चुके बहरुल उलूम ताज़ुलउलमा आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यद अली मुहम्मद नक़वी इब्ने आयतुल्लाहिल उज़मा सुल्तानुल उलमा सैय्यद मुहम्मद रिज़वानमआब इब्ने हज़रत गुफ़रानमआब और माज़ी क़रीब में

उर्दू की सबसे मेयारी तफ़सीर के साहब आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़वी के फन्ने तफ़सीर निगारी पर जल्द ही सेमिनार का इन्क़ाद करेंगे। मौलाना जलाल हैदर साहब ने जनवरी 2006 ई0 में अपने इदारे से जनाब अज़ीम अमरोहवी साहब की तैय्यार की हुई किताब “कुर्आन और हुसैन” के उनवान से छापी है जिसमें मोअल्लिफ़े मौसूफ़ का कीमती मुक़द्दमा और शोअरा का तआरुफ़ है। इस किताब में “कुर्आन और हुसैन” के उनवान से एक मरसिया दल्लू राम कौसरी का एक और मरसिया मौलाना नसीम अमरोहवी का और एक मरसिया मोअल्लिफ़ का लिखा हुआ छपा है। तीनों मरसिये फ़िक़्री, फन्नी और मक़सदी एतेबार से कामियाब हैं। मानवी ख़ूबियों के साथ किताबत, छपाई बेहतर और टाइटिल कवर काफ़ी खींचने वाला और खूबसूरत है। मोमिनीन से गुज़ारिश है कि किताब से ज़रूर फ़ाएदा उठाएँ।